UG, Sem - IIIrd (2024-28)

Subject - Psychology (MJC)

Unit - 1 Date - 03.11.2025

=> Topic - Factors in Development

By Dr. Shyam Sundar Sharma.
Deptt. of Psychology, U.R. College, Rosera.

Q. विकास में जीव जन्य कारकों का वर्णन करें।

Ans. → विकास एक सतत और क्रमिक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावात्मक परिवर्तन होता है जो जन्म से जीवन पर्यंत चलता रहता है। अर्थात् जैव जन्य कारण वे आंतरिक तत्व हैं जो व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक वृद्धि का आधार बनता है।

=> विकास के प्रमुख जीवजन्य कारण :- (1) वंशानुक्रम (Heredity) :- यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत माता-पिता के गुण इनके बच्चों में आते हैं।

=> यह प्रक्रिया जीन (Genes) एवं क्रोमोसोम (chromosomes) के द्वारा हस्तांतरित होता है।

=> यह बुद्धि, ऊँचाई, रंग, स्वभाव, प्रतिभा इत्यादि को प्रभावित करता है।

=> (2) गर्भावस्था की दशा :-

P.T.O

⊙ भ्रूण का विकास माँ के स्वास्थ्य, पोषण और मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है।

⊙ असंतुलित आहार, तनाव या धूम्रपान शारीरिक और मानसिक विकास को प्रभावित करता है।

(3.) जैविक परिपक्वता (Biological Maturity) :- ⊛ प्रत्येक व्यक्ति में जैविक परिपक्वता की गति अलग-अलग होती है।

⊛ हार्मोन और अंतःस्त्रावी ग्रंथियाँ विकास को नियंत्रित करती है।

(4) लिंग (sex) :- यह जैविक रूप से निर्धारित होता है जो विकास की प्रकृति को प्रभावित करता है।

(5) शारीरिक बनावट (Physique) :- इसके अन्तर्गत स्वस्थ शरीर, आत्मविश्वास एवं मानसिक संतुलन इत्यादि में सहायक होती है।

c) मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो विकास में संज्ञानात्मक विकास, व्यक्तित्व विकास एवं सीखने की क्षमता का विकास मुख्य रूप से आता है। जिसमें मस्तिष्क की बनावट, स्वभाव, बुद्धि स्तर, मानसिक क्षमता इत्यादि का विकास होता है।

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि विकास की प्रक्रिया में Biogenic कारक काफी महत्वपूर्ण है। यह कारक इस बात को निर्धारित करता है कि व्यक्ति में कितनी क्षमता और संभावना है।